[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3683

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कार्टूनिस्ट मारियो डी मिरांडा के जीवन में रंगों की संवेदनशीलता

अपर्णा श्रीवास्तव
रिसर्च स्कॉलर
डी.ई.आई., दयालबाग, आगरा
Email: aparnasrivastava@gmail.com

कला, कलाकार के अर्न्तमन की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है। प्राचीन युग से कला के तत्वों में रंगों का एक प्रमुख स्थान रहा है। किसी भी कला विधा में रंगों के प्रयोग के द्वारा कलाभिव्यक्ति की संप्रेषणीयता की सार्थकता आदि काल से ही सर्वविदित है। कला की नवीन विधा कार्टून या कैरीकेचर कला किसी भी अन्य विधा की अपेक्षा जनसाधारण को सीधे आकर्षित ही नहीं प्रभावित भी करती है। इस कला विधा में साधारणः काली मोटी रेखाओं का ही प्रयोग होता है, किन्तु यदि इस विधा में रंगों का उचित प्रयोग किया जाए तो उसकी संप्रेषण शक्ति और भी अधिक दृढ़ हो जाती है। इस संदर्भ में एक ऐसा ही नवीनतम प्रयोग कार्टूनिस्ट मारियो डी मिरांडा ने किया है। मारियो डी मिरांडा की गणना उन महान कलाकारों में की जाती है, जिनका सम्पूर्ण जीवन कला के प्रति समर्पित रहा है। उन्होंने अपने जीवन में निहित उल्लासमय रंगों की दृष्टि के माध्यम से कार्टून कृतियों का सजीव चित्रांकन किया है।

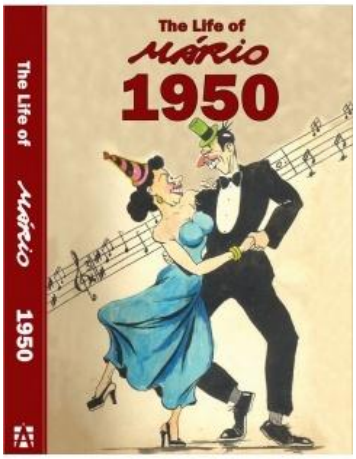

चित्र सं.–1, द लाइफ ऑफ मारियो, 1950

गोवा के इस महान कार्टूनिस्ट का जन्म 2 मई सन् 1926 ई. में दमन, भारत में हुआ था। आप बचपन से ही प्रकृति में निहित रंगों से सम्बन्धित रहे हैं, जिसका चित्रण आपने अपनी कृतियों में किया है। सन् 1936 ई. में आपने दस वर्ष की आयु में अपने नाम से 500 चित्रों का संग्रह प्रस्तुत किया। इनमें श्वानों, कैलण्डरों, दोस्तों, शिक्षक व बाल चित्रकारी के कई वर्ग हैं व कुल मिलाकर 60 वर्ग हैं। ये सम्भवतः एक अकेले कलाकार का सबसे बड़ा संग्रह है जिसे "द वर्ल्ड ऑफ मारियो" कहा जाता है। आपकी ये रंगपूर्ण कार्टूनकृतियाँ सिमरोजा आर्ट गैलरी, मुंबई में संग्रहित हैं। आपने अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का प्रदर्शन सन् 1951 ई. में कार्टूनिस्ट और इलस्ट्रेटर के रूप में अंडर ग्रेजुएशन, सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई के दिनों में ही किया। इसी समय आपने फ्रीलांस कलाकार की तरह प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया के लिए फ्रीलांस कलाकार की तरह कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। आपने अपने करियर की शुरूआत एडवरटाइजिंग स्टूडियो से की थी। सन् 1951 ई. में आपके विवाह के पश्चात् आपने अपने जीवन में आये खुशी के रंगों पर प्रकाश डालना चाहा है। इस तथ्य को आपने लाल रंग के श्रृंगारिक प्रतीक के रूप कार्टूनकृतियों में अभिव्यक्त किया है। आपने नीले रंग से जीवन की शीतलता एंव शालीनता को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

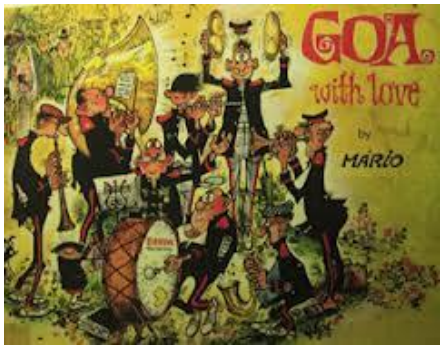

चित्र सं.–2, गोवा विद लव, 1950's

वास्तव में कला के सम्बन्ध में रंगों के प्रति उनकी दृष्टि वैश्विक रूप से दार्शनिक थी। उन्होंने मानव जीवन के रंगात्मक वैश्विक स्वरूप को अपनी रचनात्मक कार्टून कृतियों में अमरत्व प्रदान किया है इसलिए उनकी रंगपूर्ण कलाकृतियों की अपील सार्वभौमिक एंव सार्वकालिक है। उनकी कार्टून कला का उद्गम स्थान भले ही उनके अन्तःकरण में था, परन्तु उन कृतियों के रंगों का प्रवाह एंव विस्तार सर्वव्यापी है। ये कार्टून कृतियाँ दर्शकों के जीवन में उल्लासिता का संचार करती हैं। वे अपनी कृतियों में रंगों का मनोवांछित प्रयोग करना चाहते थे, जिसके लिए वे आजीवन प्रयासरत रहे। वे रंगों के प्रति इतने संवेदनशील थे कि इसका प्रभाव उनके जीवन दर्शन में स्पष्ट दर्शनीय है। उनकी कार्टून कृतियों में पीले रंग का प्रयोग उनका समाज के प्रति मित्रतापूर्ण व्यवहार को प्रदर्शित करता है। इन कृतियों के माध्यम से आप सभी को मित्रवत् व्यवहार करने के लिए प्रेरित करना चाहते थे, एंव आपने अपने संगीतमय जीवन में रंगों की महत्त्वपूर्ण विशेषता पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

उन्होंने अपने जीवन में निहित रंगों की संवेदनशीलता को कार्टूनिंग से सम्बद्ध करते हुए स्वंय कहा है कि–"कार्टूनिंग आपके करियर के मनोरंजक पक्ष को जोड़े रखने में सहायता करता है। ये आपको यह अनुभव करवाता है कि जियो ओर जीने दो। इसने मुझे एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी है कि– वो करो जिसमें आपको आनन्द आता है" एंव ये भी कहा है कि "कार्टून चित्रों को

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

बनाने के लिए कोई शॉटकट नहीं है तथा इसको बनाने के लिए आपने बहुत लम्बा संघर्ष किया है। आपने कहा है कि जीवन के अन्तिम क्षणों में जीवन के दुःखी क्षणों के विषय में सोचकर दुःखी नहीं होना चाहिए।"

चित्र सं.–3, गोवा, 1950's

उनकी कला में रंगों का प्रयोग संयोजन न होकर उनके जीवन में रंगों की संवेदनशीलता को व्यक्त करने एक माध्यम हैं। यही कारण है कि आकृति उनके लिए गौड़ थी, उनमें निहित रंगों की संवेदनशीलता का भाव प्रथम था। वे आकृति नहीं, मनोगत भावों के पुजारी कलाकार थे। कार्टून कला में उनकी रंगों की भाषा का प्रस्तुतीकरण सरल, सहज, आकर्षक एंव सांकेतिक है। वे रंगों में अन्तर्निहित मूल्यों एंव उद्देश्यों को चित्रित करना चाहते थे। आपके चित्रों में रंगों के प्रयोग के द्वारा सभी को यह प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है कि आपकी दृष्टि बर्हिमुखी है, जिस प्रकार एक कलाकार की होती है। आपने विदेशी सांस्कृतिक परम्परा का यर्थाथपूर्ण अंकन किया है। जिससे आपकी कृतियो में रंगों के प्रयोग के द्वारा आपके जीवन में सूक्ष्म, विवेकपूर्ण तथा सहृयता के समूहात्मक भावों का संकलन प्रत्यक्ष दर्शनीय है।

भारतीय परम्परा में रंगों की रसानुभूति में सौन्दर्य की रस मीमांसा अत्यन्त प्राचीन काल से होती चली आ रही है तथा भारतीयों की सौन्दर्य दृष्टि पाश्चात्यों से अधिक प्राचीन है। भारतीय रस सिद्धांत अपने व्यापक रूप में सौन्दर्य शास्त्र के अधिक निकट है। यह भारतीय कला दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। रंगों के सम्बन्ध में इस परम्परा का निर्वाह उन्होंने अपने जीवन में अपनी कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अपने जीवन की इस विशेषता को उन्होंने सांस्कृतिक, धार्मिक व कलात्मक दृष्टियों पर आधारित प्रतीकात्मकता के साथ अपनी कार्टून कृतियों में अभिव्यक्त किया है। भारतीय दर्शन में ऐसी कहावत् है कि मनुष्य प्रातःकाल यदि अरूणोदय का दर्शन कर ले तो उसके शरीर में पूरे दिन भर कार्य करने की क्षमता व ऊर्जा का संचार हो जाता है। इस कथन का आशय है कि अरूणोदय के समय सूर्य का रंग नारंगी होता है और यह आशा एंव उमंग का प्रतीक है। कार्टूनिस्ट ने अपने जीवन की इस आशावान एंव उमंगपूर्ण जीवन को अपनी कार्टून कृतियों में अभिव्यक्त किया है। आपने कृतियों में रंगों के प्रयोग द्वारा सभी से सहनशील, आशावादी, मृदुभाषी, हृदयस्पर्शी व्यवहार करने की अपील की है। इस उच्च आचरण के व्यवहार के लिए आप विश्व प्रसिद्ध हैं।

चित्र सं.–4, क्रासकंट्री स्कीइंग, 1979

प्रत्येक कृति में कलाकार की निजी पहचान, उसकी भावनाएँ एंव विचार रंगों और रूपों के माध्यम से उभरने लगते हैं। उसमें सामाजिक सन्दर्भ, यर्थाथ और दर्शन प्रत्येक कलाकार का भिन्न होता है। यद्यपि उस समय व्यंग्य चित्रों को तत्कालीन समाज में उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था तथापि उन्होंने कला के लिए एक नवीनतम प्रयोग किया जिसमें व्यंग्य चित्रों में रंगों का संवेदनशील प्रयोग किया गया था, इस चुनौतीपूर्ण कार्य के परिणाम से कार्टूनिस्ट मिरांडा ने बहुतों को आश्चर्यचकित कर दिया क्योंकि उनके चित्रांकन में तीक्ष्ण व्यंग्य कटाक्ष कार्टून चित्रों के अभाव के साथ कार्टून चित्रों में रंगों की संवेदनशीलता से हास्य व्यंग्य चित्रों को देखने के नजरिए को परिवर्तित कर दिया। परिणामस्वरूप न कि केवल उन कार्टून चित्रों की सराहना हुई वरन् तत्कालीन दर्शक वर्ग में उसकी स्वीकार्यता भी बनी तथा भविष्य के कलाकारों के लिए एक मार्ग भी प्रशस्त हो गया।

अपने कार्टूनिंग करियर के प्रारम्भिक वर्षों में कार्टूनिस्ट मिरांडा भले ही रोनाल्ड सेरले से प्रभावित रहे हों, परन्तु बाद में वे विभिन्न देशों की रंगमयी संस्कृतियों की आत्मा अर्थात् विशेषता से प्रभावित रहे हैं। जिसे उन्होंने अपने चित्रों में अभिव्यक्त किया है, इसे दशकों तक अनुकरण नहीं किया जा सकता। रंगों का सदृश्य प्रयोग एंव आंतरिक भावों का चित्रण उनकी कार्टून कला की विशेषता है। उनके लिए बाह्म आकृति और उनके आकार से अधिक उसमें अन्तर्निहित रंगों का सौन्दर्य एंव आत्मतत्त्व महत्त्वपूर्ण था। यद्यपि सुन्दरता और आत्मतत्व को अलग नहीं किया सकता क्योंकि जो सुन्दर है वास्तव में वहीं कलाकृति का आत्मतत्व है। इसी अन्तर्निहित तत्व को आपने अपनी कृतियों में उजागर किया है। आपने प्राकृतिक वातावरण में रंगों की प्रतीकात्मक विशेषता स्फूर्ति एंव ताजगी को अपने जीवन में अनुभव कर अपनी कार्टून

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कृतियों में अभिव्यक्त किया है। आपके अधिकतर चित्र ऐसे हैं जिन्हें देखकर दर्शक को आनन्द की अनुभूति होती है। आपने अपने जीवन में संवेदनशील रंगों के माध्यम से हास्य व्यंग्य चित्रों का सृजन संवाद की भांति किया है।

आपने सर्दियों के दृश्यों का भी चित्रांकन किया है जिसमें एक ओर बर्फाच्छादित वातावरण से जीवन में शिथिलता लाने वाले परिदृश्य का चित्रांकन तटस्थ रंगों के द्वारा किया है, वहीं दूसरी ओर इसी परिवेश में खेल के प्रति प्रेम एंव उत्साह को प्रदर्शित करने के लिए नारंगी रंग का प्रयोग किया है। इस चित्र के माध्यम से आपने अपने जीवन में निहित कलाकर्म के प्रति उत्साह को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। बीयर हॉल, ओल्ड लेडीज कॉफीस टाइम्स, क्रासकंट्री स्कीइंग, कार्नीवाल उत्सव, चिल्ड्रन इन द स्नो, कलर ऑन द कैटवॉक आदि शीर्षक के चित्र इसके उदाहरण हैं कि किस प्रकार रंगों के संवेदनशील प्रयोग उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण हैं एंव अत्यन्त सरलीकृत आकृतियों के माध्यम से इनमें निहित भावों का चित्रण सफलतापूर्वक किया है।

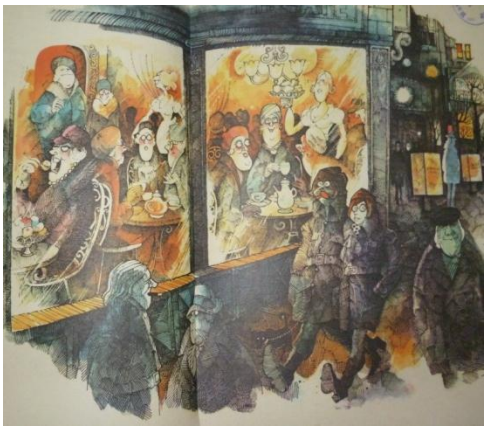

चित्र सं.–5, ओल्ड लेडीस कॉफी टाइम्स, 1979

आपकी कृतियों में दर्शक की मानवीय भावनाओं का सृजनात्मक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। इस तथ्य का पक्ष यह है कि आप कार्टूनिस्ट होने के साथ ही आम इंसान के जीवन से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों से जुड़े रहे हैं एंव आपने जनसामान्य के जीवन में निहित रंगों को अपने जीवन में भी अनुभव किया है। आपने मनुष्य के व्यस्त जीवन से कुछ हास्य क्षण या खुशी के क्षणों को अनुभव कर अपनी कृतियों में जीवन के सुखद अधिकारों को रंगों की संवेदनशीलता के माध्यम से सफल चित्रण किया है जिसे वह जीवन की व्यस्तताओं में मात्र जिज्ञासा लेकर ही संतुष्ट हो जाता है। आपने अपनी कृतियों में विषय की क्रमबद्धता को रंगों के प्रयोग के द्वारा सफलतापूर्वक प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। आपने विभिन्न सांस्कृतिक उत्सवों के माध्यम से उत्सवों के रंगों को अपने जीवन में अनुभव किया है। आपके जीवन में रंगों के प्रति इस संवेदनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण हमें आपके चित्रों में दृष्टिगोचर होता है। आपने कार्टून कृतियों में विविध रंगों का प्रयोग इस प्रकार किया है कि मानो प्रतीत होता है कि जैसे आपने बचपन में रंगों के साथ व्यतीत किये प्रत्येक क्षणों के अनुभव को खेलते हुए बिन्दुओं के समान व्यक्त किया है। इन कार्टून कृतियों में रंगों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा सहृदय पाठकों एंव प्रेक्षकों पर एक प्रभाव छोड़ा गया है जिसमें दो बातें प्रमुख होती हैं अनुभूति एंव बोध। संवेदनशील रंगो की अनुभूति जहाँ हृदय को द्रवित करती है, वहीं रंगों की संवेदनशीलता बोध को विशद करती है जिसके द्वारा कृतियों में निहित अर्थ को समझ पाना सम्भव हो पाता है। आपकी कृतियों में कलात्मक अनुभूति, विषय की गहनता एंव कला तत्वों का सुन्दर समन्वय दर्शनीय है।

चित्र सं.–6, चिल्ड्रन इन द स्नो, 1979

सम्भवतः मिराडा पहले ऐसे कार्टूनिस्ट कलाकार हैं जिन्हें सन् 1988, 2002 एंव 2012 में राष्ट्रीय पद्म पुरस्कारों पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण एंव अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत किया गया है। सम्भवतः कार्टून कला के प्रचार व प्रसार में उन्होंने एक अग्रणी और अहम् भूमिका निभायी है। आपने इसकी आधारशिला के निर्माण कार्य में अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है। आप कला सेवक के रूप में सदैव समर्पित रहें हैं साथ ही आपने 5 महाद्वीपों की यात्राएँ की एंव वहाँ कला प्रदर्शनियाँ आयोजित करते रहे। आपकी इन अमूल्य कलाकृतियों को कला प्रेमियों के दर्शनार्थ एंव भविष्य के कलाकारों के लाभार्थ हेतु देश विदेश के विभिन्न संग्रहालयों एंव आर्ट गैलरी में सुरक्षित व संरक्षित कर रखा गया है। कार्टून कला में आपका यह अतुलनीय योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

सन्दर्भः–

1 Skizzenbuch, Ein:- Germany in wintertime, Deutschland in winter, Mario de Miranda, TATA Press Limited, 1980.

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

2 Sheth, Paratima:- Dictionary of Indian Art & Artist includind Technical Art terms, Mapin Publishing in 2006.
3 Art India:- The Art news magazine of India, NGMA, March Febuary, 2009.
4 www. The Tmes of india .com
5 www. Mario Miranda profile at Kamat.com